ISSN: 2249-7862 (Print) : 2455-877X (Online)
www.aureoleonline.in

ट्रांसजेंडर की स्थिति: 'राम C/O आनंदी' में

Dr. Santy Joseph
Associate Professor, Department of Hindi
St. Aloysius College, Edathua, Alappuzha, Kerala
Email: santyjoseph@aloysiuscollege.ac.in

सार

"राम c/o आनंदी" नामक उपन्यास एक प्रेम कहानी है जो चेन्नई में चलता है। इसमें राम औरआनंदी के जीवन के उतार-चढ़ाव को दर्शाया गया है। इस पुस्तक ने साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार जीता। उपन्यास का मुख्य पात्र न होने पर भी मल्ली नामक कालिदास, वह एक हिजड़ा है, का चरित्र पाठकों की आँखें नम कर देता है। नायक राम कॉलेज जाते समय पहली बार एक हिजड़े को देखता है। वह खुद को 'अरुवाणि' बताकर नायक से पैसे मांगती है। वे आगे चलकर अच्छे दोस्त बन जाते हैं और मल्ली अपनी जिंदगी के दुःख -दर्द राम के साथ बांटती है। इन संवादों से हमें ट्रांसजेंडरों की कठिनाईयों का पता चलता है।

बीज शब्द: ट्रांसजेंडर, लैंगिक विकलांगता, इंसानियत, सकारात्मक बदलाव

प्रस्तावना

कुछ साल पहले तक समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय को कोई स्थान प्राप्त नहीं था, विशेषकर दक्षिण भारत में। दक्षिण की अपेक्षा उत्तरभारत में 'तृतीय लिंग' के लोग खुलकर समाज में लोगों के सामने काम करते हैं। उत्तर भारत में अधिकतर ट्रैन में सफर करके भिक्षा मांगकर अपनी जिन्दगी बिताते हैं। लेकिन वहां भी लोग इस वर्ग को घृणा की दृष्टी से देखते हैं और कभी -कभी पत्थर मारकर उन्हें पीड़ा पहुंचाते हैं। लोग सोचते है कि यह जन्म इश्वर का अभिशाप है। "उसके स्त्रीत्व (जनानेपन) का लोग मज़ाक उड़ाते हैं, इस वजह से उसके लिए कोई भी काम करने में सीमाऐं पैदा हो गई हैं।"[1] घर में होनेवाले शुभ कार्यों में उनको कोई स्थान नहीं मिलता। दूसरे शब्दों में कहें तो उन्हें अशुभ समझा जाता है। अपने बच्चे के ट्रांसजेंडर होने की बात जानकर माता -पिता अक्सर उसे घर में रहने के लिए मजबूर कर देते हैं। जब दूसरे लोग यह जानते है तो समाज, माता -पिता को भ्रष्ट घोषित कर देता है या माता -पिता को समाज से बहिष्कृत कर देता है। यह सोचकर वे उसे बाहर जाने या दूसरे बच्चों के साथ खेलने की अनुमति नहीं देते। 21 वीं सदी के शुरुआती आंदोलनों और 15 अप्रैल 2014 को उच्चतम न्यायलय द्वारा दी गयी 'तृतीय लिंग' की मान्यता के फलस्वरूप, समाज में यह चेतना आई है कि लैंगिक विकलांगता कोई कमी नहीं है। समकालीन दौर में या वर्तमान समय में ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति समाज में एक सकारात्मक बदलाव देखा जा सकता हैं। साधारण लोग समझदार होते जा रहे हैं और मीडिया और साहित्यकार भी इस मुद्दे पर जागरूकता फैला रहा हैं, जिससे समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति दृष्टिकोण में सुधार हो रहा है।

राम c/o आनंदी अखिल पी. धर्मजन द्वारा लिखित एक उपन्यास है, जिसमें ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के जीवन के कष्टों और संघर्षों का एक सच्चा और सजीव चित्रण देखने को मिलता है।

कथानक का सारांश

"राम c/o आनंदी" नामक उपन्यास का मुख्य पात्र न होने पर भी मल्ली नामक कालिदास का चरित्र पाठकों की

आँखें नम कर देता है। नायक राम कॉलेज जाते समय पहली बार एक हिजड़े को देखता है। वह खुद को 'अरुवाणि' बताकर नायक से पैसे मांगती है। नायक टालने की कोशिश करता है लेकिन लोगों को ध्यान देते हुए देखकर वह अपने पास मौजूद बीस रुपये देकर उससे छुटकारा पाता है। अगले दिन भी वह हिजड़ा, राम से पैसे मांगता है सुर जबरदस्ती उसके हाथ से पैसे छीनने की कोशिश करता है, जिसके चलते दोनों के बीच छीन-झपटी होती है और नायक की शर्ट फट जाती है। अगले दिन जब नायक ट्रैन में चढ़ते है, तो वह हिजड़ा फिर से उसका पीछा करता है। राम ने उसे नजरअंदाज किया, लेकिन मल्ली नाम की उस हिजड़ा ने जोर देकर उसे एक टिन का डिब्बा थमा दिया। मल्ली के पीछा करने के कारण नायक वह डिब्बा कहीं और फेंक नहीं पाया। कॉलेज के गेट तक मल्ली ने उसका पीछा किया, जिससे डरकर वह दौड़कर कॉलेज में घुस गया और वह टिन का डिब्बा कूड़ेदान में डाल दिया बाद में, कॉलेज की रिसेप्शनिस्ट ने वह टिन का डिब्बा उसे सौंप दिया। जब उसने उसे खोलकर देखा, तो उसमें पिछले दिन उसके हाथ से जबरदस्ती छीने गए सौ रुपये और कुछ अन्य नोटों के साथ तमिल में एक चिट्ठी थी, जिसमें फटी हुई शर्ट खरीदने के लिए पैसे होने का संकेत दिया गया था। इसके बाद नायक मल्ली को अपने साथ ले गया और शॉपिंग करवाई, और उसे एक साड़ी उपहार में दी। जब वे दोनों करीब आये और उनकी जान -पहचान बढ़ी, तो कालिदास नाम की उस मल्ली ने उसे मल्ली बनने की अपनी कहानी सुनाई।

सेलम में कालिदास का घर था। घर में उनके पिता एक भारी शराबी थे, और उनकी मां एक गरीब और दयनीय महिला थी। कालिदास के एक छोटा भाई भी था। जब कालिदास केवल पांच साल के थे, उनकी मां उन्हें अक्सर पड़ोसी के घर भेजती थी ताकि वे अपने पिता को घर ले आयें जो शराब पीकर बेहोश हो जाते थे। लेकिन पड़ोसी ने उनका फायदा उठाया और उनके साथ दुष्कर्म किया। यह कई बार हुआ और धीरे -धीरे कालिदास एक ऐसे व्यक्ति बन गए जिसका उपयोग लोग अपनी कामुक इच्छाओं को पूरा करने के लिए करते थे। जब कालिदास थोड़े बड़े हुए, तो उन्हें एहसास हुआ कि क्या हो रहा है और उन्होंने इससे दूर जाने का फैसला किया। हालाँकि, जब उनके साथी, लड़कियों से प्यार करने लगे, तो कालिदास ने गुप्त रूप से लड़कों से प्यार करना शुरू कर दिया। एक दिन उनके पिता ने उनकी मां को किसी अन्य व्यक्ति के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिए मजबूर करने की कोशिश की, लेकिन उनकी मां ने मना कर दिया। इससे उनके पिता ने उनकी मां को बुरी तरह मारा और मां कालिदास और उनके भाई को लेकर घर छोड़कर चली गयी।

उनकी मां खेतों में काम करके परिवार का पालन -पोषण करती थीं, लेकिन जब आय कम पड़ने लगी, तो कालिदास ने भी काम करना शुरू कर दिया। उन्होंने त्योहारों और समारोहों में महिलाओं के वेश में नृत्य करना शुरू किया और साथ ही साथ अच्छी तरह से पढ़ाई भी की। उन्होंने अपनी प्लस टू की परीक्षा में 90%अंक प्राप्त किये। हालाँकि, लोग उन्हें ताने मारते थे और उनके भाई को भी यह सब शर्मनाक लगता था। कुछ समय बाद, उनके पिता माफ़ी माँगने आए और उन्हें अपने साथ ले जाने की पेशकश की। कालिदास अपने पुराने गांव में वापस जाना नहीं चाहते थे, लेकिन दूसरों की इच्छा का सम्मान करते हुए उनके साथ चले गये।

धीरे -धीरे कालिदास के परिवार के सभी सदस्य, जिनमें उनके पिता, भाई और यहां तक कि मां भी शामिल थीं, उन्हें अकेला छोड़ने लगे। इसी समय एक सुन्दर दाढीवाला व्यक्ति कालिदास के घर के पास एक महीने के प्रशिक्षण के लिए आया। उसने कालिदास की स्थिति को समझा और उसका फायदा उठाया। जब प्रशिक्षण पूरा हुआ, तो वह व्यक्ति कालिदास को अपने साथ ले गया। कालिदास भी इसकेलिए तैयार थे, क्योंकि वे अपने घर में बहुत अकेला महसूस कर रहे थे। कालिदास ने उस व्यक्ति की देखभाल की और उनकी जरूरतों को पूरा किया। हालांकि कुछ समय बाद उस व्यक्ति और उसके दोस्तों ने कालिदास का शोषण किया और उसे अरुवानी के स्थान में छोड़ दिया। हिजड़ों ने उसकी सेवा -शुश्रूषा किया, तब से कालिदास को एक नए जीवन की शुरुआत करनी पड़ी, जहां वे मल्ली के नाम से जाने लगे और एक नए समुदाय का हिस्सा बन गए।

राम और मल्ली अक्सर मिलते थे और बातें करते थे। एक दिन मल्ली ने राम से कहा कि वह अपने घर वापस जाना

चाहती है और अपनी मां से इस बारे में बात की है। उसने यह भी बताया कि वह अपने भाई कविदास के लिए एक बुलेट खरीदना चाहती है, जो उसका पसंदीदा वहां है। अन्य हिजड़ों ने भी मल्ली की आर्थिक मदद कि ताकि वह बुलेट खरीद सके। वह अपने घर जाने से पहले राम को एक शर्ट और जींस दे दिया। हालाँकि, घर जाने से कुछ दिन पहले, पुलिस ने मल्ली को उठा लिया और उसके साथ क्रूरता की। मल्ली के शब्दों में "पुलिसवालों को हमें परेशान करने में एक तरह का मज़ा मिलता है। जब भी उन्हें मौका मिलता है, वे ऐसा करते हैं।"[2] कभी -कभी पुलिसकर्मियों ने उसे पकड़ लिया और फिर तीन -चार दिनों तक उसे ठीक से चलने -फिरने नहीं दिया। "..... अगर पुलिस ले जाए, तो उसके बाद तीन -चार दिनों तक चला भी नहीं जाता। पूरे शरीर पर बेल्ट से मारने के निशान होंगे और कुछ जगहों पर सिगरेट जलाए जाने के घाव भी होंगे।"[3] राम ने मल्ली से मुलाकात की और उसे अधिकारियों के पास शिकायत दर्ज करने की सलाह दी। राम ने मल्ली को खाना भी दिया।

अंत में मल्ली के घर जाने का दिन आ गया। मल्ली ने सभी से विदाई ली और बुलेट डीलर के साथ घर केलिए रवाना हुई। लेकिन मल्ली के उम्मीदों के विपरीत, उसके परिवारवालों ने उसे अपमानित किया उसके भाई ने बुलेट को तोड़ दिया और मल्ली को घर से बाहर निकाल दिया। उसे देखकर मां ने घृणा भरकर पूछता है कि "तुम इस दिन के समय क्यों आए?"[4] पिताजी पूछता है कि "तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम इस भद्दे रूप में यहां चले आए?"[5] जब भाई कविदास ने देखा कि लोग उसका और उसके परिवार का मज़ाक उड़ा रहे हैं, तो उसका गुस्सा और आक्रोश एक साथ भड़क उड़ा। उसने मल्ली के सीने पर ज़ोरदार लात मारा। उस लात के प्रहार से वह सड़क पर चित्त होकर गिर पड़ी। अपमानित महसूस करते हुए, मल्ली डीलर के साथ वापस आ गयी। उसके भाई के द्वारा दी गयी पीड़ा ने मल्ली के शारीरिक और मानसिक रूप से तोड़ दिया। घर से लौटने के बाद जब मल्ली राम से मिलती है तब वह अपनी दुखद कहानी उससे कहती है कि "मैं ने अपनी जिंदगी में अब तक कभी किसी बाइक के पीछे बैठकर सवारी नहीं की है जब भी में लोगों को इस तरह दूसरे से सत्कार जाते हुए देखता हम, तो मेरा भी बहुत मन करता है। जब मैं ने बाइक खरीदी थी, तब मैं ने बहुत सपने देखे थे। मैं ने सोचा था कि मन भरने तक अपने भाई के साथ उस पर घूमूँगा।"[6] वह आगे कहती है कि "'मेरी आँखों के सामने ही उस बाइक को तहस -नहस कर दिया। राम, उसने सिर्फ उस बाइक को नहीं तोड़ा, बल्कि मेरे ....मल्ली अपनी बात पूरी नहीं कर पाई और बस अपने दिल पर हाथ रख दिया।"[7]

राम ने मल्ली को सांत्वना दी और उसे डांस अकादेमी में दाखिला दिलाने में मदद की, जो उसका सपना था। उसे डांस क्लास के लिए एक जोड़ी चिलंगा भी मिली। लेकिन मल्ली की ख़ुशी ज्यादा दिन नहीं रही। उस दिन रात, पुलिस - एस. आई .फारूख और ड्राइवर कथिरवेल -ने मल्ली के साथ क्रूरता की। आम लोगों की तरह, जब मन में गुस्सा और दुःख एक साथ आये तो मल्ली को भी लगा कि उसे उन लोगों से बदला लेना चाहिए जिन्होंने उसे परेशान किया था "उस पल चीखते हुए मल्लिका का मन किया कि वह उसकी गर्दन की नसें काटकर अलग कर दे।"[8] मल्ली ने पुलिस से गिड़गिड़ाकर भीख मांगी कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है और उसे अकेला छोड़ दिया जाये। "मुझसे अब और नहीं होगा सर। मुझे इस तरह परेशान मत कीजिये। मैं भी आप लोगों की तरह ही एक इंसान हूँ।"[9] फिर भी, उन्होंने मल्ली का दुरुपयोग किया और उसकी हत्या कर दी। उसके बाद उन्होंने उसके शरीर को कूड़ादान में फेंक दिया। मल्ली के उत्पीड़न से सम्बंधित अंश को पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि अधिकारियों का व्यवहार ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति कितना अमानवीय था।

मल्ली की मृत्यु के बाद राम ने उन्हें अपने खिलाफ होनेवाले हमलों के खिलाफ अधिकारियों से शिकायत करने का सुझाव दिया। तब तिलोथामा-मल्ली के मित्र ने इस प्रकार कहा कि "कुछ नहीं होगा बेटा। पहले भी जब ऐसा हुआ था, तब हमने ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों से संपर्क किया था और कलेक्टर को शिकायत भी दी थी। .....लेकिन जाँच ख़त्म होने पर पोस्टमॉर्टेम रिपोर्ट में यह सामने आया कि उन दोनों की मौत वाहन दुर्घटना में हुई थी। ऐसे मामलों में पुलिस और डॉक्टर सब मिले हुए होते हैं।"[10] मल्ली की मृत्यु के बाद राम उससे पूछता है कि "क्या हम मल्ली के मामले में कुछ कर सकते हैं अक्का ....उसने कांपती हुई आवाज़ में कहा।"[11] उसका जवाब इसप्रकार था।"अब हम सिर्फ इतना ही कर

सकते है कि अपने प्रिय जनों के शरीर का सम्मान के साथ अंतिम संस्कार करें। हमें यह नहीं पता कि पहले जो लोग गुजरे हैं, उन्हें कहाँ दफनाया या संस्कार किया गया था। ....अगर हम यह कहकर शव लेने जाऐं कि हम अपने खर्च पर अंतिम संस्कार करेंगे, तब भी वे आईडी -कार्ड न होने का बहाना बनाकर हमें उसे सौंप नहीं रहे हैं।"[12] मल्ली के मृत्यु के बाद सहेली का दुःख हम इन शब्दों में देख सकते हैं। यह पूरे ट्रांसजेंडर समाज का दुःख है। "कितनी सारी इच्छाऐं थीं। डांस सीखना था। बड़े -बड़े प्रोग्राम करके चेन्नई में एक सपनों का महल बनाना था। और जिन किन्नरों के पास घर नहीं है, उन सबको वहां बसना था। और अब देखो क्या हो गया। एक लावारिश लाश बनकर किसी श्मशान में पड़ी तुम और तुम्हारे पैर जल रहे हैं न? तिलोत्तमा उन घुंघरुओं की और देखकर फूट-फूटकर रो पड़ी।"[13] उपन्यास के अंत में हम देख सकते है कि मल्ली की मृत्यु से वहां के ट्रांसजेंडर समाज शोक संतप्त हो गया और उत्तेजित होकर उन्होंने पुलिसकर्मियों पर प्रतिशोध लिया।

निष्कर्ष

समय बदल गया है, विज्ञान और तकनीक ने बहुत उन्नति कर ली है, लेकिन आज भी कुछ लोगों के मन में ट्रांसजेंडर्स के प्रति नफरत है। हमें यह समझना चाहिए कि वे भी हमारी तरह हाड़- मांस के इंसान ही हैं। हमारी तरह उनके पास भी खुशियां और दुःख हैं, दिल हैं, भावनाऐं हैं, सपने हैं और उनमें भी इंसानियत है। कानूनों के बदलने से पहले हमारी सोच का बदलना ज़रूरी है। उन्हें नफ़रत की दृष्टी से नहीं, बल्कि अपने भाई -बहनों की तरह सम्मान की नज़र से देखें। प्रतीक्षा की किरण है! हम इस उपन्यास में देख सकते है कि नायक राम, राम की मां, बुलेट डीलर मणि, पाटी, दी चेन्नई अकादेमी कॉलेज के प्रिंसिपल साहब सभी ट्रांसजेंडर्स को अपनाते हैं।

आधार ग्रंथ सूची

1. अखिल पी. धर्मजन, राम C/O आनंदी, पृ. 104
2. वही, पृ. 83
3. वही, पृ. 83-84
4. वही, पृ. 203
5. वही, पृ. 204
6. वही, पृ. 210
7. वही, पृ. 210
8. वही, पृ. 226
9. वही, पृ. 229
10. वही, पृ. 234
11. वही, पृ. 234
12. वही, पृ. 234
13. वही, पृ. 229